वाह री माया तेरे रूप अनेक

प्रमोद किरण सेठी देहली

आदरणीय सुन्दर साथ जी, जैसा कि हम जानते हैं, हम इस फ़ानी दुनिया में माया का खेल देखने आए हैं। जब ब्रज और रास से भी हमारी तृप्ती नहीं हुई तो श्री राजजी महाराज को यह बगिया सजानी पड़ी।

यह तो हम सबको विदित है कि ब्रज एवं रास में दुःख का नामो निशान नहीं था पर यह ब्रह्माण्ड तो दुःख ही दुःख का बना है। जब हम रूहों ने खेल मांगा तब पिया जी ने कहा कि मेरी प्यारी रूहो-तुम माया के तिलिस्सम में सब कुछ भूल जाओगी। मैं अपनी पहचान कराने के लिए रसूल भेजूंगा तुम उसे भी पहचानने से इनकार कर दोगी।

श्री बीतक साहब में इस माया ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं आत्माओं को जागने ही नहीं दूंगी। मैं ऐसे-ऐसे हथियार भेजूंगी जिनमें आत्मायें उलझ कर रह जायेंगी। दज्जाल सबके मन में बैठ जाएगा और सभी रूहें शंकाओं व अविशवास के घेरे में घिरी रहेंगी। यदि कोई अधिक आत्म शक्ति व मनोबल वाली रूह ने अपने धनी की पहिचान कर भी ली तो वह भी भुलावों में भूल जाएगी या उसका इमान डोल जाएगा।

पूज्य साथ जी–आज बहुत दुःख होता है कि माया तो धनी से भी बड़ी हो गई है और इसने हमारे दिलों पर इस तरह कब्जा कर लिया है कि धनी हमारे सामने है फिर भी हम आँखें मूंदे बैठे हैं। साथ जी यह ब्रह्माण्ड तो दुःख ही दुःख का है। यदि इसमें हम सुख की कामना करते हैं तो यह हमारी ही भूल है–भला दुःख की मण्डी में सुख कैसे प्राप्त होगा। आज यदि माया का कोई भी कष्ट हम पर आ जाता है तो हम पर मुर्दानगी क्यों छा जाती है। आज हम क्यों इतने संकीर्ण विचारों के होते जा रहे हैं। मात्र माया के कारण हमारे ईमान क्यों डोलने लगते हैं। विचार करो हमने अपने धनी से, अपने प्राण प्रीतम से क्या कौल किया था और हम वास्तव में क्या कर रहे हैं। हम तो संसार को अखण्ड करने के दावे लेते हैं पर स्वयं ही खंडित होते जा रहे हैं। हम तो दुनिया को अपने प्रीतम की सही स्वरूप की पहिचान कराने से भी डरते हैं कि कहीं उन्हें बात बुरी न लग जाए–पर सच तो कड़वा होता ही है–कब तक इसे दुनियादारी की मीठी गोलियों में छिपाकर खाने या खिलाने की कोशिश करते रहेंगे। हमारी तो वाणी में भी स्पष्ट रूप से लिखा है कि इस दुनिया में चलना तो तलवार की धार पर चलना है और तलवार की धार पर चलने वाले अपने पांव या चोट की परवाह नहीं किया करते वरन्

Nijanand App

अपनी मनज़िल को मद्देनजर रखते हुए आगे बढ़ते रहते हैं।

यह समाज का दुर्भाग्य है या भाग्य की विडम्बना कि हम हर कार्य को दुनियावी रिश्तों की नज़र में देखने लगे हैं और अपने नूरी रिश्तों को भूल गए हैं। यदि कोई हमें सच्चाई की राह दिखाता है–अज्ञानता से दूर करने का प्रयास करता है–हमारे वास्तविक स्वरूप की व मूल निजघर की पहचान कराने की कोशिश करता है तो हम वजूदों की प्रतिष्ठा के चक्रव्यूह में उलझ जाते हैं–आओ साथ जी विचार करें–ठण्डे दिलोदिमाग से सोचें–परखें। क्या इस ब्रह्माण्ड में मोमिन नूरी तन लेकर आएंगे या उनके मुखड़े नूरी होंगे ? कितनी गफलत में डूबे हैं हम। क्या हमें पता नहीं कि आत्मायें इन्हीं तनों में आकर बैठीं और यह वजूद पाँच तत्वों से मिलकर बना है। काश हम किसी के अवगुणों को भूल उसके गुणों को ग्रहण करने का स्वभाव बना सकें–वजूदों को नहीं आतम को पहिचान सकें और इस फानी दुनिया की नहीं अपने निज घर की पहिचान कर सके–पर फिर अनायास ही ध्यान आता है।

वाह री माया तेरे रूप अनेक

जिस प्रकार शरीर के रोगी हो जाने पर भूख, प्यास, नींद, रुचि और शान्ति समाप्त हो जाती है, अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट पदार्थ खाने की भी इच्छा नहीं होती, नर्म से नर्म बिस्तर पर भी नींद नहीं आती है, कुछ भी अच्छा नहीं लगता है, इसी प्रकार मन का रोगी होने पर सत्संग, वाणी-चर्चा, साधना, उपासना, चिन्तन-चितवनी, सेवा और धर्म ज्ञान की बातों की भी इच्छा नहीं होती। यह स्थिति स्वस्थ और स्वाभाविक नहीं है। शरीर के रोगी होने की अपेक्षा मन का रोगी होना ज्यादा बुरा और हानिकारक होता है क्योंकि शरीर से कुछ न करता हुआ भी ऐसा व्यक्ति मन में बहुत कुछ करता रहता है।

Nijanand App